ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 49 कुल पृष्ठ-8 10 से 16 फरवरी, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 मा.शु.-09

गुरुकुल महाविद्यालय आमसेना, उड़ीसा का 55वाँ वार्षिक समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण के द्वारा किया समारोह का उद्घाटन

युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, युवा विद्वान् पं. आरक्षित शास्त्री एवं पं. जीववर्द्धन शास्त्री का किया गया अभिनन्दन

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अपनाने से ही भारत बन सकता है विश्वगुरु

– स्वामी आर्यवेश

मेरा जीवन आर्ष एवं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के लिए समर्पित है

– स्वामी धर्मानन्द

सुदूर उड़ीसा के आदिवासी अंचलों में स्थित गुरुकुल महाविद्यालय आमसेना, खरियार रोड, जिला–नवापारा, उड़ीसा का 55वाँ वार्षिकोत्सव समारोह भव्यता के साथ 5 से 7 फरवरी, 2022 को सम्पन्न हुआ। समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, मिशन आर्यावर्त के निदेशक युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी के अतिरिक्त कालाहांडी के यशस्वी सांसद श्री बसन्त कुमार पांडा जी, आर्य समाज मालवीय नगर के धर्माचार्य पं. आरक्षित शास्त्री, दयानन्द सेवाश्रम संघ के संघर्षशील संचालक पं. जीववर्द्धन शास्त्री, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान डॉ. विकास कुमार पांडा, सभा मंत्री श्री आनन्द कुमार आर्य, आर्य समाज कटक के प्रधान श्री दुष्यन्त कुमार, कर्मठ संन्यासी स्वामी सोमवेश जी परिव्राजक, स्वामी विशुद्धानन्द जी, स्वामी विश्वानन्द जी व स्वामी नारदानन्द जी आदि के अतिरिक्त श्री राकेश दूबे रायपुर, आचार्य कोमल कुमार गुरुकुल कोसरंगी, छत्तीसगढ़, आचार्य सुरेश कुमार गुरुकुल कोसरंगी, महात्मा खेममुनि जी गुरुकुल जांगड़ा, श्री धीरज शास्त्री व श्री अंकित शास्त्री भिलाई, आचार्य राकेश कुमार जी गुरुकुल तुरंगा, आचार्य विनय कुमार जी गुरुकुल कोरापुट, आचार्या लता जी कन्या गुरुकुल सोनाबेड़ा, आचार्य महेन्द्र जी गुरुकुल नागालैंड, आचार्य योगेन्द्र कुमार उपाध्याय, आचार्य गौतम जी, आचार्या डॉ. शारदा जी, आचार्य अखिलेश जी सहित अनेक विद्वान्, आचार्य एवं कार्यकर्ता उत्सव में सम्मिलित हुए।

विदित हो कि स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी ने सन् 1968 में बिहड़ जंगल एवं विरान पड़ी भूमि पर एक झोपड़ी बनाकर चार ब्रह्मचारियों को विद्यार्थी बनाकर गुरुकुल आमसेना को प्रारम्भ किया था। उस समय चारों ओर जंगल थे, जंगली जानवर थे, आने–जाने के रास्ते बिल्कुल नहीं थे। आय के स्रोत बिल्कुल शून्य थे। ऐसी विपरीत परिस्थियों में पता नहीं किन संस्कारों के कारण स्वामी धर्मानन्द जी ने हरे–भरे हरियाणा प्रदेश को छोड़कर उस आदिवासी क्षेत्र को अपना कार्य क्षेत्र चुना और लगभग 54 वर्ष पूर्व जिस गुरुकुल का बीजारोपण किया था आज वह गुरुकुल रूपी पौधा एक वट वृक्ष का रूप ले चुका है। जहाँ आमसेना में कन्याओं का और लड़कों के विशाल गुरुकुल हैं, वहाँ गुरुकुल की अनेक शाखाएँ स्वामी जी महाराज के संरक्षण में फल–फूल रही हैं। कन्या गुरुकुल सोनाबेड़ा तो ऐसे विरान स्थान और बीहड़ जंगल में स्थित है जहाँ टेलीफोन, इण्टरनेट, बिजली व सड़क आदि की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। गुरुकुल के चारों तरफ नक्सलवादी गतिविधियों का पूरा प्रभाव है। किन्तु ये स्वामी धर्मानन्द जी महाराज का साहस एवं पुरुषार्थ ही है कि वहाँ कन्याओं का एक बहुत ही सफल गुरुकुल संचालित हो रहा है। इस गुरुकुल की आचार्या आदरणीया बहन लता जी अपनी अन्य बहनों के साथ निष्ठा के साथ कार्य कर रही हैं। इसी प्रकार नागालैण्ड में नागाओं एवं ईसाईयों के क्षेत्र में गुरुकुल खोलकर स्वामी जी महाराज ने एक और अति साहस का कार्य कर दिखाया है। नागालैण्ड के गुरुकुल के अतिरिक्त वहाँ से दर्जनों लड़के–लड़कियाँ आमसेना में आकर नियमित अध्ययन भी कर रहे हैं। नागालैण्ड के ये वे बच्चे हैं जिन्हें न हिन्दी आती, न संस्कृत आती और न ही खान–पान ही इधर के क्षेत्र से मिलता है किन्तु उन सभी बच्चों को गुरुकुल

शेष पृष्ठ 5 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आर्य मुसाफिर पं. लेखराम

आर्यों के लिए पण्डित लेखराम जी का सबसे घनिष्ठ परिचय यह है कि वह एक समय 'आर्य गजट' के सम्पादक रहे थे। यों उनका नाम आर्य समाज के मूर्धन्य कर्मवीरों में और अमर हुतात्माओं में है। उन्होंने यह जानते हुए विधर्मियों का खण्डन किया कि इसके फलस्वरूप उन्हें अपने प्राण भी देने पड़ सकते हैं। परन्तु इस कारण वह कभी भी झिझके नहीं।

उनका जन्म सन् १८५८ में अविभक्त पंजाब के झेलम जिले के सैयदपुर गांव में हुआ था। उनके पिता मेहता श्री तारासिंह सामान्य स्थिति के ब्राह्मण थे।

आर्यत्व की बड़ी प्रगति

यह सोच कर आज आश्चर्य और आनन्द होता है कि आर्यसमाज के प्रयत्नों के फलस्वरूप भाषा के मामले में देश कितनी लम्बी मंजिल तय कर आया है। उस समय हिन्दी, संस्कृत का कहीं नाम ही नहीं था। सब विद्यालयों में पढ़ाई उर्दू और फारसी में होती थी। लेखराम जी ने भी इन्हीं में शिक्षा पाई। वह अत्यन्त मेधावी थे, परन्तु शिक्षा बहुत दूर तक चली नहीं। आर्थिक परिस्थितियों के कारण पढ़ाई बीच में छोड़कर ही वह १७ वर्ष की आयु में एक सिपाही के रूप में पुलिस में भर्ती हो गए।

पंडित लेखराम जी जिस भी काम में जुट जाते थे, उसे पूरी तन्मयता से करते थे। इस कारण उनके अफसर उनसे प्रसन्न थे। पदोन्नति करके उन्हें सार्जेंट बना दिया गया।

अध्यात्म में रूचि

परन्तु लेखराम जी का मन आध्यात्मिक विषयों में अधिक लगता था। वह विचारक थे। मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के क्रांतिकारी विचारों का भी उन पर प्रभाव पड़ा। सन् १८८० में वह पेशावर में थे। वहीं उनका आर्य समाज से सम्पर्क हुआ। वह स्वामी दयाानन्द जी के विचारों से इतने प्रभावित हुए कि पुलिस की नौकरी छोड़कर आर्य समाज के प्रचार को ही उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

अहमदिया मत का खण्डन

उन दिनों मुसलमानों का एक नया सम्प्रदाय चला था अहमदिया सम्प्रदाय। उसका मुख्य केन्द्र कादियान में था, इसलिए इन्हें कादियानी भी कहा जाता था। इनका गुरु स्वयं को पैगम्बर कहता था। पं. लेखराम जी ने अहमदिया सम्प्रदाय की पोल खोलते हुए, तकजीब बुराहीन अहमदिया' नुस्खा खब्त अहमदिया' आदि कई पुस्तकें लिखीं। इन पुस्तकों को मुसलमानों ने भी पसन्द किया और अहमदिया लोगों का बहिष्कार कर दिया। इससे अहमदिया लोग पंडित लेखराम जी के शत्रु हो गए।

कुछ समय बाद पंडित जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पूर्णकालिक उपदेशक बन गये। उस कार्य में पुलिस की नौकरी जितना वैभव नहीं था, परन्तु मानसिक सन्तोष था कि वह धर्म का प्रचार कर रहे हैं।

पंडित लेखराम जन्म से ही नहीं, कर्म से भी ब्राह्मण थे। उनमें चिन्तन, भाषण और लेखन की क्षमता थी। इतिहास, ईसाइयत और इस्लाम का उन्होंने गहन अध्ययन किया था और इनमें उन्हें प्रामाणिक विद्वान् माना जाता था। सन् १८६३ में उनका विवाह कुमारी लक्ष्मी के साथ हुआ। उनका एक पुत्र भी हुआ, पर उसकी छोटी आयु में ही मृत्यु हो गई।

सन् १८६० में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उन्हें ऋषि दयानन्द का विशद जीवन चरित्र लिखने का काम सौंपा। इस कार्य के सिलसिले में जानकारी एकत्र करने के लिए उन्हें देश के विभिन्न भागों की लम्बी यात्राएं करनी पड़ीं। इसलिए उनका उपनाम 'आर्य मुसाफिर' पड़ गया।

महात्मा मुंशीरामजी द्वारा सराहना

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र की भूमिका में महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने लिखा है कि इसमें सन्देह नहीं कि पंडित लेखराम जैसा अन्वेषक स्वभाव का कार्य ही इस आर्य के लिए उपयुक्त था, परन्तु मेरे विचार से यह पुस्तक पाठकों के हाथ में और शीघ्र पहुंचती और घटनाओं की दृष्टि से और पूर्ण होती, यदि इन घटनाओं को एकत्रित करने का कार्य किसी ऐसे अन्वेषक को दिया गया होता, जिस पर उपदेश देने का दायित्व न होता। कौन नहीं जानता कि पंडित लेखराम को वैदिक (आर्य) धर्म की उन्नति का विचार कभी भी एक स्थान पर बैठने नहीं देता था और यदि उन्होंने कहीं सुन लिया कि अमुक स्थान पर मोहम्मदी अथवा ईसाई मतों के उपदेशक विशेष सफलता प्राप्त कर रहे हैं, तो फिर बड़े से बड़े काम और आवश्यक कार्य को छोड़कर भी उस स्थान पर पहुंचना वह अपना कर्तव्य समझा करते थे।

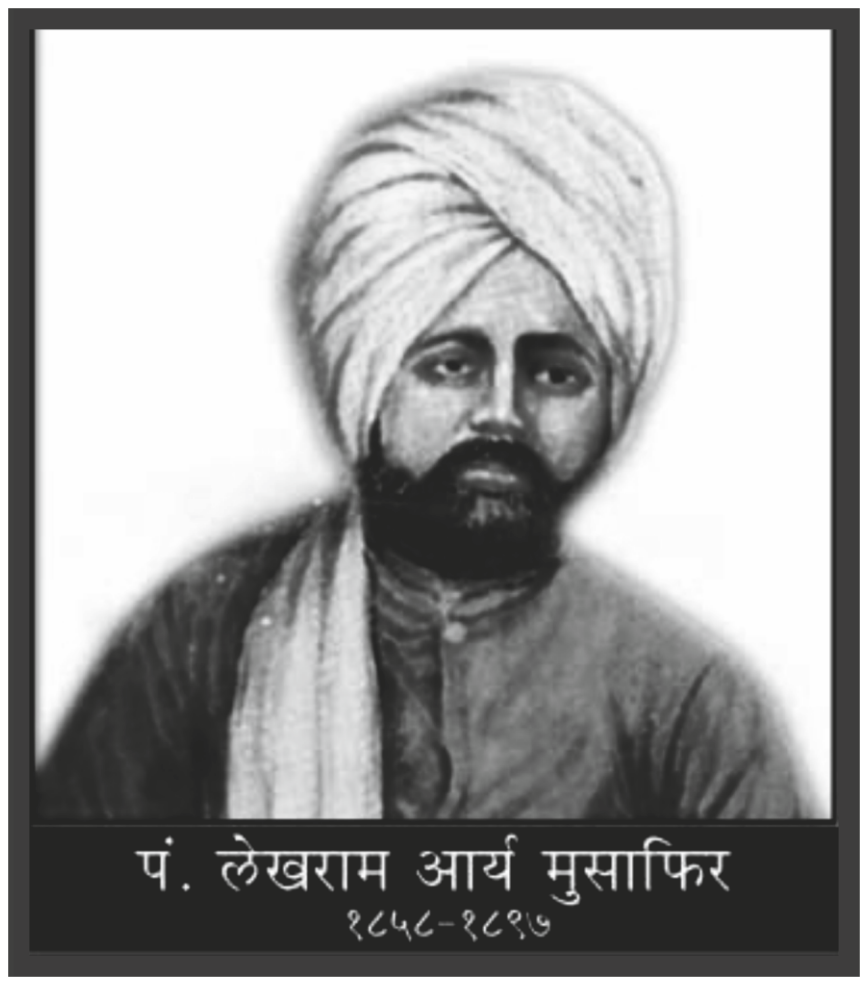

बलिदान

हृष्ट पुष्ट शरीर व पुलिस की नौकरी के अभ्यास के फलस्वरूप पंडित लेखराम जी को थकान और भूख प्यास का कष्ट, कष्ट ही नहीं लगता था। कई वर्ष के प्रयत्न के बाद उन्होंने ऋषि के जीवन चरित्र सम्बन्धी सामग्री एकत्र कर ली। वह उन्होंने उर्दू में लिखी थी। सन् १८९७ में जब वह अपने घर में बैठे उसे पुस्तक रूप में लिख रहे थे, तभी एक काले, गठीले हत्यारे ने आकर उन पर छुरे के वार करने शुरू कर दिए। छाती और पेट पर गहरे घाव हुए। अपना काम पूरा करके हत्यारा भाग निकला। उसे पहचाना नहीं जा सका और न कभी पकड़ा ही जा सका। उनके रक्त की बूंदें महर्षि के जीवन की लिखी जा रही पांडुलिपियों पर पड़ी थीं, इसलिए उन्हें 'रक्त साक्षी' नाम दिया गया।

घायल पण्डित जी को तत्काल अस्पताल ले जाया गया। घाव गहरे थे। उन्हें बचाया नहीं जा सका। ६ मार्च १८९७ की रात में उनका प्राणान्त हो गया। उस समय महात्मा मुंशीराम जी उनकी मृत्यु शय्या के पास थे। उस दिन उन्हें पता नहीं था कि बीस एक बरस बाद उन्हें भी इसी प्रकार धर्म की वेदी पर अपना बलिदान देना होगा।

आर्य जनों के लिए पण्डित लेखराम का सन्देश था कि 'आर्य समाज का लेखन (तहरीर) और भाषण (तकरीर) का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए।

महात्मा हंसराज जी की श्रद्धांजति

पं. लेखराम जी के विषय में महात्मा हंसराज जी ने लिखा हैः मैंने धर्मवीर पं. लेखराम जी के दर्शन उस समय किए, जबकि उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया ही था। उनकी आकृति बड़ी थी, परन्तु उनके हृदय में धर्मप्रेम की अग्नि बड़ी प्रचंडता से प्रज्ज्वलित थी। कोई समय नहीं, जब उन्हें आर्यसमाज का ध्यान न हो। कोई भी कष्ट ऐसा नहीं था, जिसे वह आर्य समाज के लिए सहन करने को उद्यत न हों। यदि पांच सौ मील से भी तार आया है कि कोई हिन्दू अपने धर्म का त्याग करने लगा है, तो पण्डित लेखराम वहां पहुंच कर कार्य करने के लिए उद्यत हैं, न मार्ग की कठिनाई का विचार है; न ही इस बात का विचार है कि जहां जाएंगे, वहां भोजन मिलना भी कठिन है; विरोधियों की संख्या सहस्रगुणा है और सहायक सम्भवतः कोई भी न हो; परन्तु फिर भी धर्मवीर अपने यज्ञ पर अटल हैं; अपने मिशन की पूर्ति के लिए उपस्थित है।

परम तपस्वी

उनका जीवन तपस्या का जीवन था। वह कष्ट सहन कर सकते थे तथा करते थे। प्रतिदिन यात्रा में रहना कोई साधारण बात नहीं। उनको इस बात की तनिक भी चिन्ता न थी कि उन्हें धनिकों जैसा भोजन प्राप्त होता है अथवा निर्धनों जैसा। जो कुछ प्राप्त हुआ, उसी को खा पीकर, अपितु कई बार भूखा रहकर भी वह उपदेश देते थे, शास्त्रार्थ करते थे। उनकी वेशभूषा भी सादा थी।

प्राणों का निर्मोही निर्भय विप्र

उनमें अद्भुत निर्भीकता थी। सहस्रों विरोधियों के मध्य खड़े होकर भी वे उनके मत का खण्डन करने से न डरते थे। उनको इस बात की कतई चिन्ता न थी कि मेरा जीवन सुरक्षित है अथवा नहीं। मिर्जाइयों के सामना के लिए वह प्रतिक्षण डटे रहते थे।

सर्वस्व समर्पण करने की चाह

आर्य समाज के लिए उनमें अत्यन्त प्रेम था, इस पर फिदा (समर्पित) थे। न अपने घर की कुछ चिन्ता थी तथा न मित्रों का कुछ विचार था। जिस प्रकार जैसूवाट मिशनरी अपने निश्चय के पक्के थे तथा अपने मिशन को सबसे बढ़कर समझते थे, इसी प्रकार यह धर्मवीर भी आर्यसमाज तथा वैदिक प्रचार से बढ़कर किसी उद्देश्य को स्वीकार नहीं करते थे। यही उनके जीवन की लगन थी। इसके लिए वह सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार थे।

घातक इस बात में तो सफल हुआ कि पंडित जी के जीवन को समाप्त कर दें, परन्तु उसने पंडित जी के जीवन को सहस्रों गुणा अधिक उज्ज्वल तथा पवित्र बना दिया तथा आर्यसमाज की जड़ों को भी दृढ़ कर दिया क्योंकि शहीद का रक्त धर्म के भवन का सीमेंट (गारा चूना) होता है। ●

''वैलेण्टाइन दिवस''
सन्देश प्रेम का, या वासना का?

& U;k;eafrl ,e- jkekt kbl

वैलेण्टाइन दिवस पुनः आने वाला है, 14 फरवरी को। भारत के अनेक तरूण-तरूणियां भी इसे धूम-धाम से मनाएंगे। हमारे कुछ कथित बुद्धिजीवियों के द्वारा इसका खुला समर्थन, महापुरुषों के द्वारा वर्णित हमारे श्रेष्ठ जीवन मूल्यों के क्षरण से सम्भावित विनाशकारी परिणामों की ओर, स्पष्ट संकेत करता है। दुष्प्रभावी परिणाम न केवल दृष्टिगोचर हो रहे हैं, वरन् दावानल की भांति फैलते जा रहे हैं। प्रेम हम सबको जन्म से ही प्राप्त होता है अतः इसे हमारे सांस्कृतिक मूल्यों की परम्परा के अनुसार हर पुरुष, स्त्री को एक दैवी सम्पदा के रूप में, न कि भोग विलास की एक सामग्री के रूप में देखे ऐसी अपेक्षा रहती है। मानव प्रकृति का गहन अध्ययन करने के पश्चात् हमारे पूर्वजों ने इस सांस्कृतिक मूल्य को विकसित किया था कि प्रत्येक नर, अपनी पत्नी के अतिरिक्त, प्रत्येक नारी के प्रति अपनी माता-बहन का भाव रखेगा। पुरुषों में स्त्रियों पर यौन आक्रमण करने की निकृष्ट वृत्ति रूपी विष का प्रभाव दूर करने वाली, अनिष्टरोधी औषधि के रूप में इस सिद्धान्त का विकास हुआ था। ''सर्वेभवन्तु सुखिन'' सम्पूर्ण मानव समाज के लिए शांति एवं सुख सुनिश्चित करने के लिए भारत तो उपर्युक्त एवं अन्य सांस्कृतिक जीवन मूल्यों की प्रतिमूर्ति ही है। यह देखकर कि इस प्रकार के श्रेष्ठ सिद्धान्तों पर पश्चिम का भौतिकवादी, विषयभोग तथा वासना से प्रभावित चिन्तन कुठाराघात कर रहा है, स्वामी विवेकानन्द ने नीचे लिखे अनुपम शब्दों के माध्यम से मानव जाति को चेतावनी दी थी, ''क्या भारत समाप्त हो जाएगा? तब विश्व से सारी आध्यात्मिकता समाप्त हो जाएगी। समस्त नैतिक पूर्णत्व समाप्त हो जाएगा। धर्म के प्रति समस्त माधुर्य एवं सहानुभूति समाप्त हो जायेगी। आदर्शवादिता समाप्त हो जाएगी और इनके स्थान पर वासना एवं कामुकता का साम्राज्य छा जाएगा। धन का वर्चस्व बढ़ेगा। धोखाधड़ी, छल, बल तथा स्पर्धा आनन्द के विषय चढ़ेगी।'' कालान्तर से गांधी जी ने भी यह चेतावनी दी थी।

जब अपने पास इतने उच्चकोटि के जीवन मूल्य हैं, तो कोई वजह नहीं है कि हमारा युवा वर्ग वैलेण्टाइन दिवस का शिकार बने जो प्रेम की आड़ में वासना की ओर आकर्षित करते हुए धन, स्वास्थ्य एवं चरित्र का क्षरण करते हैं। यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि हमारा युवा वर्ग केवल दिग्भ्रमित है। यदि स्नेह पूर्वक उनको यह बताया जाए कि वैलेण्टाइन दिवस के पीछे वास्तविक उद्देश्य क्या है और इनके परिणाम क्या होते हैं तो वे अपनी गलती समझेंगे और वैलेण्टाइन दिवस मनाने की अवांछनीय प्रथा को तिलांजलि दे देंगे। इसलिए हमको अपने बच्चों को यह समझाना चाहिए कि वैलेण्टाइन दिवस मनाना बेकार है।

यह मेरा दृढ़ मत है कि हमारी सांस्कृतिक सम्पदा की सम्पन्नता अतुलनीय है। परन्तु हमने इसके महत्व को समझा नहीं है। यदि हम अपनी संस्कृति का अनुसरण नहीं करते है तो एक कौम के नाते हम आत्महत्या करेंगे।'' (साबरमती आश्रम में स्मृति-पट पर अंकित सन्देश)

इसी प्रकार हमारे सांस्कृतिक जीवन मूल्य यह अपेक्षा करते हैं कि हम अपने माता-पिता को जीवनपर्यन्त नित्य प्रति, प्रभु तुल्य प्रेम एवं सेवा दें। वर्ष में एक बार परित्यक्त माता या पिता के जन्म दिवस पर एक मात्र पुष्प गुच्छ देने की परम्परा हमारे सांस्कृतिक मूल्यों की नहीं रही है। हमारी संस्कृति की नैतिक संहिता के अनुसार न केवल विवाहेतर सम्बन्ध वर्जित है, वरन किसी भी प्रकार के वासनामय भाव से अपनी पत्नी के अतिरिक्त किसी अन्य महिला को कोई सन्देश, सुगन्धि, पुष्पहार या वस्त्र भेजना भी एक प्रकार का व्यभिचार है जो अत्यन्त घातक एवं अधर्म माना गया है। जहां तक प्रेम प्रदर्शन की बात है तो हमारे अनेक श्रेष्ठ पर्व हैं। उनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण है रक्षाबन्धन। अपने भाई की कलाई में राखी बांध कर बहन अपने उच्चकोटि के प्रेम का प्रदर्शन करती है। यह पर्व अब सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर भी मनाया जाने लगा है। कोई भी लड़की या महिला किसी भी पुरुष को जिसे वह भाई की तरह मानती है, राखी बांधती है और बदले में वह व्यक्ति मिठाइयां तथा वस्तुएं उस मुंह बोली बहन को देता है। इसी प्रकार शादी की सालगिरह पर, या पति अथवा पत्नी, जिसका भी हो, साठवें जन्म दिवस पर उत्सव का आनन्द लिया जा सकता है। हमारी संस्कृति में पति या पत्नी के प्रति प्रेम प्रकट करने का वर्ष में केवल एक ही दिन विधान नहीं है। नित्यमेव, इन शब्दों में प्रेम प्रकट करने का विधान है : 'पारस्परिक प्रेम, निष्ठा एवं विश्वसनीयता का धर्म, पति एवं पत्नी के द्वारा जीवनपर्यन्त निभाना होगा।''

स्वतन्त्रता के पश्चात् जब हमने अपने सांस्कृतिक जीवन मूल्यों का पराभव होने दिया तो भयंकर परिणाम सामने आने लगे। ऐसे कम ही लोग होते हैं। जो अपने जीवन साथी को विशुद्ध प्रेम वश वैलेण्टाइन कार्ड भेजते हैं। अधिकांश युवक-युवतियां, पति-पत्नी या भावी पति-पत्नी, न होते हुए भी, वासना भाव से, न कि शुद्ध प्रेमवश, 14 फरवरी को वैलेण्टाइन दिवस मनाते हैं और आपस में वैलेण्टाइन-कार्डो का आदान प्रदान करते हैं। 14 फरवरी सन्त वैलेण्टाइन का जन्म दिवस है। किसी ऐसे पुरुष या महिला को जो आपस में पति-पत्नी या भावी पति-पत्नी न हों, प्रेम के नाम पर वासनामय सन्देश देने का कोई महत्व नहीं होता। इस सन्दर्भ में 'दि न्यू इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' में दिया गया वर्णन उल्लेखनीय हैः-

इन्साइक्लोपीडिया अमेरकाना का अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण संकेत देता है कि युवक-युवतियों की यौन प्रवृत्ति का नाजायज फायदा उठाकर ग्रीटिंग कार्ड बनाने वालों की पैसा कमाने की चाल का ही परिणाम होता है यह आदान प्रदान। ये कार्ड प्रायः पद्यात्मक एवं सुकोमल भाव वाले होते हैं,- किन्तु कभी-कभी ये हास्यास्पद और अभद्र भी होते हैं।''

वस्तुतः वैलेण्टाइन दिवस पर ग्रीटिंग कार्डों पर दिए गए सन्देशों के माध्यम से काम वासना परिलक्षित करना ही उद्देश्य होता है। पैसा कमाने के लालच के कारण ग्रीटिंग कार्ड बनाने वाले लोग, अपने समाज के युवक-युवतियों की भावनाओं का शोषण करते हुए कार्डों को लोकप्रिय बनाते हैं। इसके परिणामस्वरूप युवा वर्ग की नैतिक एवं शारीरिक शक्ति के ह्रास की उन्हें कोई चिन्ता नहीं होती।

यह एक दुर्भाग्य का विषय है कि हमारी फिल्में तथा टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले धारावाहिक, व्यावसायिक विज्ञापन, फैशन प्रदर्शनियां एवं अर्धनग्नता प्रदर्शन करने वाले लोग सौन्दर्य एवं यौन सम्बन्धों का बड़ा ही भद्दा चित्रण प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार के वृहद स्तर पर प्रचारित प्रसारित अश्लील और कामुक विषय वस्तु से युवा वर्ग यह समझने लगता है कि जीवन का उद्देश्य केवल यौन आनन्द प्राप्त करना ही है, वह चाहे नैतिक हो या अनैतिक। उन व्यवसायी प्रचारकों को इस बात की कोई चिन्ता नहीं रहती कि युवा वर्ग के ऊपर इसका क्या दुष्प्रभाव पड़ेगा। इस सम्बन्ध में 'दैनिक हिन्दू' के एक पाठक, पोल्लूर के श्री एम. के. नाम्बियार ने 'हिन्दू' को पत्र लिखा था जिसमें इस दुश्चक्र की भर्त्सना करते हुए वैलेण्टाइन कार्डों में छपे शब्दों 'चुम्बन का अभ्यास करो, साथ-साथ झूमते हुए स्नान करो।'' का उल्लेख किया गया है। इस सन्दर्भ में न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर का 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' नामक चलचित्र (फिल्म) में प्रदर्शित कामुक दृश्यों को लेकर चलाए गए, राजकपूर बनाम दिल्ली प्रशासन (ए. आई. आर. 1980, एस. सी. 258) मुकदमे में कथन अति महत्वपूर्ण है। अश्लील फिल्मों की असफलता पर उनका कथन थाः-

यह एक अत्यन्त शोचनीय विषय है कि अच्छाई के प्रचार-प्रसार का शक्तिशाली माध्यम सिनेमा आजकल फूहड़ प्रदर्शन की सूक्ष्म प्रक्रिया से लोक रूचि का अभद्रीकरण कर रहा है। यह किशोर-किशोरियों के दिमागों में लम्पटता की घुसपैठ करवाता है, व्यावसायिक विधि से लोगों को विषयासक्ति की ओर आकर्षित करने में दलाली करता है, और उनकी कामुकता को इस हद तक बढ़ावा देता है कि वे यौन सम्बन्धों के प्रलोभनों के आगे घुटने टेक देते हैं।'' ..... ऐसी फिल्में जो लोकाचरण को दूषित करती हैं उन्हें उदारतापूर्वक प्रमाण पत्र मिल जाते हैं। संसद के द्वारा दिए गए विधानों का उद्देश्य होता है लोगों के सदाचार की रक्षा करना, किन्तु व्यवस्था के अन्दर विद्यमान कानून के शत्रु उनका विध्वंस करने पर तुले रहते हैं।''

यहां यह उल्लेख समीचीन होगा कि अमेरिका में यौन सम्बन्धों को आवश्यकता से अधिक महत्व देने के कारण परिवार टूट रहे हैं, वैवाहिक सम्बन्धों में कमी आती जा रही है, और लाखों बच्चे शारीरिक एवं मानसिक यातनाओं का शिकार बन रहे हैं, ''मैरिज इन अमेरिका- ए रिपोर्ट टु दि नेशन'' शीर्षक से अध्ययन की एक रिपोर्ट, जो 1995 में प्रकाशित हुई थी, यह चेतावनी देती हैः-

''यदि यही हालात चलते रहे तो इसका अर्थ सांस्कृतिक आत्महत्या से बढ़कर कुछ नहीं होगा।'' (स्टेट्मैन, बुधवार, मई 31, 1995, पृष्ठ 6)

यह एक दयनीय स्थिति है कि हमारे समाज के कुछ कथित बुद्धिजीवी वैलेण्टाइन दिवस का समर्थन करते हैं, जबकि इस दिन फैशन शो एवं अर्द्धनग्न नृत्यों के माध्यम से कामुकता की नुमाइश लगाई जाती है। इन सभी के पीछे मंशा होती है केवल वासना एवं कामुकता। निश्चित रूप से इनका उद्देश्य वह शुद्ध प्रेम नहीं होता है जो हमारी संस्कृति में समझा एवं आचरित किया जाता है।

जब अपने पास इतने उच्चकोटि के जीवन मूल्य हैं, तो कोई वजह नहीं है कि हमारा युवा वर्ग वैलेण्टाइन दिवस का शिकार बने जो प्रेम की आड़ में वासना की ओर आकर्षित करते हुए धन, स्वास्थ्य एवं चरित्र का क्षरण करते हैं।

यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि हमारा युवा वर्ग केवल दिग्भ्रमित है। यदि स्नेह पूर्वक उनको यह बताया जाए कि वैलेण्टाइन दिवस के पीछे वास्तविक उद्देश्य क्या है और इनके परिणाम क्या होते हैं तो वे अपनी गलती समझेंगे और वैलेण्टाइन दिवस मनाने की अवांछनीय प्रथा को तिलांजलि दे देंगे। इसलिए हमको अपने बच्चों को यह समझाना चाहिए कि वैलेण्टाइन दिवस मनाना बेकार है।

(लेखक पंजाब हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश हैं।)

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी-तपस्वी संन्यासी,
युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 85वें जन्मदिवस के अवसर पर

15वाँ बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

दिनांक : 01 मार्च, 2022 (मंगलवार) से 13 मार्च, 2022 (रविवार) तक

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम),
ग्राम-टिटौली, जिला-रोहतक (हरि.)

स्वामी इन्द्रवेश

समय : प्रतिदिन प्रातः 8 से 11 बजे तक, सायं 3 से 6 बजे तक

ब्रह्मा : स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती जी,
नूरपुर, हिमाचल प्रदेश

अध्यक्षता : स्वामी आर्यवेश जी
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
नई दिल्ली-110002

संकल्प

इस महायज्ञ में समाज के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि, डॉक्टर, वकील, शिक्षाविद् जन प्रतिनिधि, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक नेता एवं हजारों स्त्री-पुरुष, छात्र एवं छात्राएँ आहुति देकर कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं पाखण्ड के विरुद्ध संकल्प लेंगे।

मुख्य आकर्षण

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
महिला दिवस पर
विशेष कार्यक्रम
स्वामी इन्द्रवेश जयंती समारोह
कार्यकर्ता
अभिनन्दन समारोह

fo'k"k % महायज्ञ में उच्चकोटि के संन्यासी, विद्वानों एवं भजनोपदेशकों द्वारा कार्यक्रम निरन्तर चलता रहेगा। यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव अभी से अपनी सूचना देकर कृतार्थ करें। आप सभी महायज्ञ में आहुति डालकर राष्ट्र के नव-निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

आयोजक

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम)

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम-टिटौली, जिला-रोहतक (हरि.)
सम्पर्क : 941663 0916, 93 54840454, 946643 0772, 01262-286900

पृष्ठ 1 का शेष

गुरुकुल आमसेना एवं कन्या गुरुकुल आमसेना के माध्यम से हजारों युवक-युवतियों का निर्माण हुआ है

– स्वामी व्रतानन्द

स्वामी धर्मानन्द जी ने आदिवासी क्षेत्रों में गुरुकुल वैदिक संस्कृति की दुंदुभी बजा रखी है

– स्वामी आदित्यवेश

आमसेना के आचार्यों ने पूरे पुरुषार्थ के साथ हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं में पारंगत तो किया ही है, वहीं उन्हें शुद्ध शाकाहारी भी बना दिया है। ईसाई मिशन के कुचक्रों को भी ये नागा क्षेत्र के ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणियाँ भलीभांति समझ चुके हैं और उनका निश्चय है कि अपने क्षेत्र में वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार को ही आगे बढ़ायेंगे।

स्वामी धर्मानन्द जी महाराज के कार्यों के सम्बन्ध में जितना लिखा जाये उतना थोड़ा है। निःसंदेह उन्होंने आर्य समाज और गुरुकुलों के इतिहास में अपना एक स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाने वाला अध्याय तैयार कर दिया है। वे स्वामी श्रद्धानन्द जी की विरासत के एक मजबूत पैरोकार एवं वैदिक संस्कृति के एक मजबूत स्तम्भ हैं। उनके शिष्य स्वामी व्रतानन्द जी महाराज एक निष्पृह संन्यासी हैं और उड़ीसा के ख्याति प्राप्त वैद्य होने के कारण एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व हैं। वर्तमान में स्वामी धर्मानन्द जी महाराज के संकल्पों को पूरा करने के लिए स्वामी व्रतानन्द जी अहर्निश कार्य कर रहे हैं और सभी गुरुकुलों और विशेषकर आमसेना के दोनों गुरुकुलों को पूरी तन्मयता एवं निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। स्वामी व्रतानन्द जी के साथ डॉ. कुंजदेव मनीषी, ब्रह्मचारी मनुदेव वाग्मी, कन्या गुरुकुल की आचार्या डॉ. पुष्पा वेदश्री, आचार्य कोमल कुमार जी गुरुकुल कोसरंगी, आचार्य महेन्द्र जी व अन्य नैष्ठिक ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणियाँ पूरे मनोयोग एवं समर्पण भाव के साथ अथक परिश्रम कर रहे हैं। ऐसे आर्ष शिक्षा के प्रांगण में जाकर एक विशेष उत्साह, ऊर्जा एवं आनन्द की अनुभूति होती है।

इस त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव का उद्घाटन 5 फरवरी, 2022 को प्रातः 10 बजे ओ३म् ध्वज आरोहण के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने कर-कमलों से किया। इस अवसर पर उन्होंने ओ३म् ध्वज की व्याख्या करते हुए बताया कि ओ३म् परमपिता परमेश्वर का निज नाम होने के कारण सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और इस सृष्टि का नियन्ता है। उस परमेश्वर की छत्रछाया में समस्त मानव समाज सुरक्षित एवं संरक्षित है। अतः यह ओ३म् ध्वज किसी सम्प्रदाय या किसी धर्म का नहीं, बल्कि परमपिता परमेश्वर के प्रति मानव मात्र को प्रेरित करता है कि हम सभी एक ईश्वर की सन्तान हैं और वही हमारा माता, पिता, बन्धु और सखा है। ऐसे ईश्वर की कृपा मानव समाज पर बनी रहे, इसी भावना के साथ इस ध्वज का उत्तोलन किया जाता है। उसी 'ओ३म्' ईश्वर का ज्ञान वेद है और वेद ज्ञान भी किसी सम्प्रदाय व धर्म विशेष का नहीं बल्कि ईश्वर ज्ञान होने के कारण मानव मात्र के लिए उपयोगी एवं कल्याणकारी है। अतः समस्त मानव समाज को वेद ज्ञान से लाभान्वित होना चाहिए और उसका ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। ऐसे ज्ञान को प्राप्त कराने के लिए हमारे गुरुकुल सर्वोत्तम शिक्षा केन्द्र हैं, जहाँ ईश्वरीय ज्ञान वेद एवं सम्पूर्ण वैदिक वांगमय को पढ़ने-पढ़ाने एवं जानने का अवसर सबको समान रूप से मिलता है। सभा प्रधान जी ने ध्वजारोहण के साथ गुरुकुल की उन्नति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए कामना की और सभी गुरुकुलवासियों को शुभकामनाएँ दी।

यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि गुरुकुल में गत् एक सप्ताह से ऋग्वेद पारायण यज्ञ उत्सव के उपलक्ष्य में चल रहा है। जिसका ब्रह्मत्व आचार्य मनुदेव वाग्मी एवं पौरोहित्य आचार्य गौतम जी कर रहे हैं।

ध्वजारोहण के पूर्व यज्ञ का अनुष्ठान हुआ उसके पश्चात् गुरुकुल प्रांगण में नव-निर्मित गौशाला शेड का नवापारा के पशुपालन के अधिकारियों ने उपस्थित रहकर उद्घाटन किया। उद्घाटन की प्रक्रिया पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न की गई। गौशाला उद्घान के पश्चात् मुख्य पंडाल में उत्सव का प्रथम सत्र व सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जिसमें बिहार से पधारे पं. सत्य प्रकाश आर्य जी के भजनों का कार्यक्रम रहा एवं गुरुकुल के स्नातक श्री अनन्त शास्त्री एवं आचार्य मनुदेव जी ने भी सुन्दर भजन प्रस्तुत किये। इस सम्मेलन के मंच का संचालन ब्रह्मचारी मनुदेव वाग्मी जी ने बड़ी कुशलता के साथ किया। सम्मेलन में जहाँ गुरुकुल के ब्रह्मचारी और कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने अपने गीत एवं व्याख्यान आदि प्रस्तुत किये वहीं स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ।

स्वामी आर्यवेश जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली और आधुनिक लॉर्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली की तुलनात्मक समीक्षा करते हुए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को देश के भविष्य के लिए अत्यन्त आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को सर्वांगीण विकास के अवसर प्रदान करती है। गुरुकुलों में विद्यार्थियों को 24 घण्टे आचार्य एवं आचार्याओं की देख-रेख में, नियंत्रण में रहना पड़ता है और उनको नियमित दिनचर्या, खेल-कूल, शुद्ध खान-पान आदि के अतिरिक्त सात्विक, आध्यात्मिक एवं वैचारिक दृष्टि से उत्तम वातावरण प्राप्त होता है। उन्हें भोगवादी संस्कृति एवं जीवन को भटकाव की ओर ले जाने वाले वातावरण से वर्षों तक दूर रहने का अवसर प्राप्त होता है। गुरुकुलों में वेद-वेदांग, संस्कृत-साहित्य, व्याकरण आदि के अतिरिक्त गणित, विज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र एवं अंग्रेजी भाषा का भी पूर्ण शिक्षण दिया जाता है। उन्हें प्रातः एवं सायं संन्ध्या, यज्ञ एवं नैतिक शिक्षा के द्वारा आध्यात्मिकता की शिक्षा दी जाती है। इस प्रकार से शिक्षा एवं संस्कार तथा व्यक्तिगत आचरण का उत्कृष्ट स्वरूप गुरुकुलों में देखने को मिलता है। ऐसी शिक्षा के मुकाबले पर लॉर्ड मैकाले द्वारा लागू की गई शिक्षा प्रणाली को सरकारों एवं निजी क्षेत्रों के द्वारा भरपूर साधन प्रयोग करके चलाया जाना कितना सार्थक है, इस पर देश में एक बहस छिड़नी चाहिए। जिस उद्देश्य के लिए लॉर्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली को लोग अधिक उपयोगी मानते हैं, क्या वो उद्देश्य गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से प्राप्त नहीं किया जा सकता, इसका उत्तर होगा प्राप्त किया जा सकता है। जो विषय आधुनिक शिक्षा प्रणाली के स्कूल, कॉलेजों में पढ़ाये जाते हैं यदि वे सभी विषय गुरुकुलों में भी पढ़ाये जाते हों और उनके अतिरिक्त गुरुकुलों में संस्कार एवं जीवन की बहुत सारी व्यावहारिक शिक्षा भी अतिरिक्त विद्यार्थियों को प्राप्त होती हो तो क्यों नहीं देश की सरकारें गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को ही सारे देश के बच्चों के लिए उपलब्ध करातीं और क्यों नहीं सरकारें गुरुकुलों को पूरे संसाधन उपलब्ध करातीं? स्वामी आर्यवेश जी ने निष्कर्ष रूप में स्पष्ट कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली जब पूरे देश के बच्चों के लिए लागू होगी और उन गुरुकुलों से निकलने वाले ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणियां जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में दायित्व संभालेंगे। बड़े-बड़े पदों पर जिम्मेदारियां लेंगे, गृहस्थ आश्रम को स्वर्ग बनाकर दिखायेंगे तब ये भारत देश एक बार फिर से विश्वगुरु का दर्जा प्राप्त कर सकेगा। भारत विश्वगुरु जब कभी भी बना था तब भारत में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली लागू थी। भारत के युवाओं का व आम लोगों का चरित्र भी अति उज्जवल था। दुनिया के अन्य देशों के लोग भारत आकर चरित्र एवं कला-कौशल की शिक्षा ग्रहण करते थे और भारत को अपना गुरु मानते थे। यहाँ से प्राप्त की गई चरित्र एवं कला-कौशल को वे अपने देशों में प्रचारित-प्रसारित करके अपने-अपने देशों की उन्नति किया करते थे।

सायंकालीन कार्यक्रम 3 से 6 बजे तक और उसके पश्चात् भोजन आदि के बाद रात को 8 से 11 बजे तक गुरुकुल सम्मेलन के नाम से दोनों दिन आयोजित हुए। रात्रि के कार्यक्रम में गुरुकुल के छात्र एवं छात्राओं ने अनेक प्रेरणादायक कार्यक्रम प्रस्तुत करके उपस्थित जनसमूह को अत्यन्त प्रभावित किया। जिनमें बच्चों के अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी, उड़िया, छत्तीसगढ़ी एवं नागा आदि भाषाओं में व्याख्यान हुए एवं छोटी-छोटी नाटिकाओं का कार्यक्रम विशेष था।

6 फरवरी, 2022 को प्रातः 8 से 10 बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति हुई जिसमें अनेक लोगों ने यजमान बनकर अपनी आहुतियाँ प्रदान कीं। उसके पश्चात् मुख्य कार्यक्रम विद्वानों के अभिनन्दन का था जो मुख्य पंडाल में 11 बजे प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर स्थानीय सांसद श्री बसंत कुमार पांडा भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। सर्वप्रथम तीन विद्वानों का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया जिनमें तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, युवा विद्वान् पं. आरक्षित शास्त्री जी एवं पं. जीववर्द्धन शास्त्री जी के नाम उल्लेखनीय हैं। इन तीनों विद्वानों को परम्परागत सम्मान के साथ नगाड़े बजाते हुए मुख्य मंच पर लाया गया और उन्हें अभिनन्दन पत्र, शॉल एवं श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया गया। तीनों विद्वानों को परममित्र मानव निर्माण ट्रस्ट जो स्व. चौ. मित्रसेन आर्य जी के परिवार द्वारा चलाया जाता है के द्वारा 21 हजार रुपये की राशि भी सम्मान स्वरूप प्रदान की गई।

शेष पृष्ठ 7 पर

Message to be delivered in Ritsumeikan University, Japan—

Human Rights And Responsibility

— Swami Agnivesh

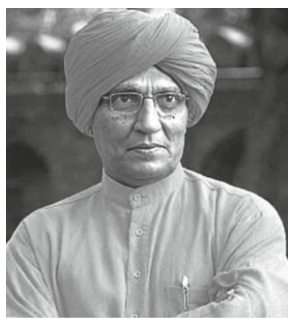

To uphold the rights of all living beings is the responsibility all of us have as conscious participants on this planet earth.

It is not enough that we sit on the sidelines, enjoy what we can of life with no regard for the mark we leave with each footprint. The Right to life entails a responsibility to protect and nurture the life within us and in all other beings as sacred.

Spirituality is a call to the sacred. To pay homage to the sacred is to ensure that each individual life be given the opportunity to fulfill its utmost potential.

The acceptance of the responsibility of human life is the hallmark of a spiritual person. A spiritual person acts with gratitude, not greed. A spiritual person sees the miracle of creation and seeks to protect and nourish it. They are not attached to their own comforts, name or fame, above holding to a spiritual principle. They are aware, that happiness on this earth is a result of effort, not of laziness or apathy.

A spiritual life does not consist of elaborate rituals or prayers, instead our prayer should be directed through our own actions, to live as harmlessly as possible, to treat all beings with love and respect – to follow the golden rule – to treat others as we would ourselves be treated, which is the law of harmlessness.

Harmlessness is not simply abstaining from harmful actions, as inaction is a breeding ground for harm. True harmlessness requires healing action which promotes holism, to act on behalf of the many, rather than the few.

Much of the suffering in India, and everywhere on this globe is a result of potentials being weakened, stifled and stunted through the abuse of human rights.

People enjoying plenty when others are stuck with poverty and when their affluence is a result of the plundering of the natural world are the worst human rights abusers. Their actions may not be seen on the world stage along with dictators and fascists, however it is as a result of their acceptance of the status quo that many human rights abuses occur.

Meanwhile, the wealthy enjoy a good conscience and a tax exemption through charity, but charity is not what it will take to redress the balance.

A truly spiritual world does not just talk, it acts and not in charity but in sacrifice.

Charity entails the gift given when a state, human being or section of community is in surplus due to the needs of others not being met.

Sacrifice allows the fulfillment of need, rather than greed, so that all may live in greater equity.

When human beings are able to be responsible for their actions and conscious that each action has an effect on the whole, the nation of sacrifice will be in action.

Vegetarianism is one example of such sacrifice. It is only through our ignorance and greed that we consume that bodies of animals when there are more than enough legumes, grains and vegetables to feed the world.

It is not charity, technology, or new ideas which have the potential to save the face of human spirituality, and to support a sustainable future. Greed is not sustainable. It is sacrifice by many that will truly bring a spiritual heaven to earth.

Rather than looking for God "out there" in materialism, or religious ritual, sacrifice is the natural fruit of the human heart when it is in touch with the God within, the true sustaining force – it is though living the sustaining force in our daily lives that we create a sustainable and God like future.

All the above views have been called from profound study of the Vedas, Upanishads as expounded by one of the greatest of Vaidic Scholar Swami Dayanand. The views also encapsulate the performed spiritual traditions of Gautam Buddha, Mahavir Jain. Zarusthutra, Jesus, Mohammed, Nanak, Kabir and Gandhi and coutless number of women who by their compassion and spiritual integrity have passed the way of humanities progress all through ages.

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थांदला में 73 वाँ गणतन्त्र दिवस मनाया गया

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थांदला, जिला–झाबुआ (मध्य प्रदेश) में 73वें गणतन्त्र दिवस की पावन बेला पर बृहद् यज्ञ तथा ध्वजारोहण किया गया। संस्था के अध्यक्ष श्री विश्वास सोनी तथा भाजपा की मन्त्री श्रीमती संगीता सोनी, बंटी डामोर आश्रम के संचालक आचार्य दयासागर, श्री जीववर्धन शास्त्री, आश्रम के कोषाध्यक्ष श्री गुलाबसिंह निनामा, प्रधानाध्यापक श्री नीरज भट्ट तथा आश्रम के सभी अध्यापकगण उपस्थित रहे। सायंकाल राजस्थान के कुशलगढ़ क्षेत्र में शान्ति महायज्ञ का आयोजन श्री जीववर्धन शास्त्री के ब्रह्मत्व में किया गया।

ऋषि उद्यान अजमेर में सार्वदेशिक आर्यवीर–वीरांगना दल का 93 वाँ स्थापना दिवस मनाया गया

ऋषि उद्यान अजमेर में सार्वदेशिक आर्यवीर–वीरांगना दल का 93वाँ स्थापना दिवस 26 जनवरी, 2022 को मनाया गया। इस कार्यक्रम में परोपकारिणी सभा के पूर्व प्रधान डॉ. वेदपाल, कोषाध्यक्ष श्री सुभाष नवाल, आचार्य कर्मवीर, प्रांतीय संचालक श्री भवदेव शास्त्री एवं श्री विश्वास पारीक का उद्‌बोधन हुआ। यज्ञोपरान्त श्रीमती पुष्पा क्षेत्रपाल, श्री मुकेश आर्य व श्री हेमन्त ने देशभक्ति गीत व भजन के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किये। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ आर्यवीरों का सम्मान किया गया जिसमें ऋषि देशभक्त आर्य, श्री यतीन्द्र, श्री कमलेश पुरोहित, श्री किशनचन्द होतचन्दानी आदि मुख्य रहे। इसके साथ ही श्रीमती स्नेहा राठौड़ की सुपुत्री आर्यवीरांगना खुशी का जन्मदिवस भी मनाया गया।

आर्यवीर दल पाली में 73 वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया

आर्यवीर दल पाली, राजस्थान में 26 जनवरी, 2022 को 73वाँ गणतन्त्र दिवस श्री दिलीप परिहार तथा आर्य समाज के वरिष्ठ पदाधिकारी श्री गजेंद्र अरोडा, श्री धनराज आर्य, श्री विजयराज आर्य, श्री घेवरचंद आर्य के मुख्य आतिथ्य में मनाया गया। निर्धारित समय पर श्री धनराज आर्य, समाज मंत्री श्री विजयराज आर्य ने ध्वजारोहण किया। तत्पश्चात् श्री दिलीप परिहार के नेतृत्व में जिला स्तरीय कार्यक्रम में आर्यसमाज द्वारा यज्ञ पर्यावरण व कोरोना वायरस रक्षा का संदेश देती झांकी, आर्यवीर दल द्वारा 'करो योग– रहो निरोग' की झांकी तथा तलवार संचालन, लाठी संचालन, जिमनास्टिक और बॉक्सिंग के हैरतअंगेज प्रर्दशन किये गये। साथ ही खेलकूद प्रतियोगिता भी हुई जिसमें भाग लेने वाले एवं विजेता खिलाड़ियों को आर्य समाज के पदाधिकारियों द्वारा पुरस्कार वितरण किये गये। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ आर्यवीर गणपत भदौरिया ने किया। श्री दिलीप परिहार ने वैचारिक क्रांति और राष्ट्र भक्ति पर उद्‌बोधन दिया तथा सभी का आभार व्यक्त किया।

प्रवेश सूचना – सत्र–2022–23
महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल शास्त्री नगर, लुधियाना (पंजाब)

छठी (आयु +9 से –11 वर्ष) एवं सातवीं (आयु +10 से –12 वर्ष) कक्षा में कन्याओं के प्रवेश हेतु। नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/– रुपये) भरकर 31 मार्च, 2022 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएँ। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किये जा सकते हैं।)

कन्याओं की लिखित प्रवेश परीक्षा 3 अप्रैल, 2022 (रविवार) को प्रातः 8 बजे होगी।

सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

– सुरेश मुंजाल, प्रधान, मो.:–9814629410

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत यजुर्वेद भाष्य भारी छूट पर उपलब्ध

250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य

मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)

(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

पृष्ठ 5 का शेष

गुरुकुल महाविद्यालय आमसेना, उड़ीसा का 55वाँ वार्षिक समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न

सम्मान के पश्चात् स्वामी आदित्यवेश जी ने गुरुकुल आमसेना एवं परममित्र मानव निर्माण ट्रस्ट का आभार प्रदर्शित करते हुए इस सम्मान को सामाजिक कार्यों में समर्पित किया। उन्होंने कहा कि स्वामी धर्मानन्द जी महाराज ने मुझ जैसे सबसे कम आयु के संन्यासी को इस अभिनन्दन के योग्य समझकर मेरा सम्मान किया है, यह मेरा सौभाग्य है और मैं गुरुकुल आमसेना तथा परममित्र मानव निर्माण ट्रस्ट का हृदय से सम्मान करता हूँ। उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को भारत के युवा वर्ग के लिए अत्यन्त उपयोगी बताया और कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की विरासत को स्वामी धर्मानन्द जी एवं स्वामी व्रतानन्द जी जिस निष्ठा एवं कुशलता के साथ आगे बढ़ा रहे हैं वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। स्वामी जी के तप, त्याग से हमें प्रेरणा मिलती है कि व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी कार्य करते हुए अपने लक्ष्य को कैसे प्राप्त कर सकता है। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे वैदिक संस्कृति एवं वैदिक शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाने के लिए जीवनदानी बनें और अपने जीवन को इसी कार्य के लिए समर्पित करें। स्वामी आदित्यवेश जी ने वेद की वसुधैव कुटुम्बकम् की विचारधारा को अपनाने पर बल दिया और कहा कि हम दयानन्द के अनुयायी हैं। अतः हम कभी भी संकीर्ण नहीं हो सकते, साम्प्रदायिक नहीं हो सकते। हमें संसार का उपकार करने के लिए महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज का संगठन दिया है। उसके माध्यम से हमें पूरे संसार के उपकार की योजना बनाकर कार्य करना चाहिए। हमें नशाखोरी, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, धार्मिक अन्धविश्वास व पाखण्ड, महिला उत्पीड़न एवं शोषण के विरुद्ध कार्य करना चाहिए। इसी से पूरा विश्व समाज आर्य बन सकता है। जो कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के लक्ष्य को प्राप्त करा सकता है।

पं. आरक्षित शास्त्री ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि मैं इसी गुरुकुल का स्नातक हूं और आर्य समाज मालवीयनगर, दिल्ली में पौरोहित्य के कार्य को करते हुए मुझे बहुत सारे धार्मिक एवं दानी यजमानों का सहयोग प्राप्त हुआ जिसे मैं अपनी इस मातृ संस्था गुरुकुल आमसेना के लिए जुटा पाया हूँ। उन्होंने कहा कि मैंने आर्य समाज मालवीयनगर के नाम से यहां 18 लाख रुपये की लागत से अतिथि गृह का निर्माण कराया है। वर्ष में सैकड़ों बार गुरुकुल के विद्यार्थियों के भोजन के लिए यजमानों द्वारा दी गई राशि गुरुकुल में भेजता रहता हूँ। इससे मुझे अत्यन्त संतोष एवं आनन्द की अनुभूति होती है, क्योंकि जिस गुरुकुल में पढ़कर मैंने अपने जीवन का निर्माण किया उस गुरुकुल का मैं किंचित भी सहयोग कर पाता हूँ इसे मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ। मेरा सम्मान करके गुरुकुल के संस्थापक पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी महाराज एवं पूज्य स्वामी व्रतानन्द जी महाराज ने मुझे कार्य करने की नई ऊर्जा प्रदान किया है। मैं आशा करता हूँ कि उनका आशीर्वाद मेरे ऊपर सदैव बना रहेगा।

पं. जीववर्द्धन शास्त्री जी ने भी इसी प्रकार अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि मैंने अपने जीवन का निर्माण इसी गुरुकुल में रहकर किया। मैं यहाँ के सबसे उदण्ड विद्यार्थियों में से था किन्तु पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी महाराज ने एक कुशल गुरु की भूमिका निभाते हुए हमारे जैसे उदण्ड बच्चों को भी मानव बनाकर समाज को सौंप दिया। आज मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि पूज्य स्वामी जी महाराज एवं गुरुकुल आमसेना की शिक्षा एवं संस्कारों के कारण ही मैं राजस्थान के बांसवाड़ा क्षेत्र में आदिवासियों के बीच कार्य करने में सफल हुआ। आप सबको आश्चर्य होगा कि बांसवाड़ा में ईसाई मिशनरियों ने अपना पूरा प्रभाव जमा रखा था। घर–घर में उनकी पकड़ थी किन्तु जब हमने वहां पर वैदिक धर्म का झण्डा गाड़ा और अपना कार्य प्रारम्भ किया तो हमें उन ईसाईयों का मुकाबला करना पड़ा। हमारे ऊपर अनेक बार छूरे और चाकुओं से हमले हुए किन्तु हम लोग मजबूती से डटे रहे और आज उसका परिणाम यह हुआ कि बांसवाड़ा से एक आदिवासी बहन को हमने निर्दलीय विधायक बनाकर अपनी शक्ति का परिचय दिया। आज पूरे बांसवाड़ा क्षेत्र से ईसाई लोगों को हमने खदेड़ दिया है। यह सब जो कुछ कार्य हम कर पा रहे हैं इसकी ऊर्जा का मूल स्रोत, गुरुकुल आमसेना, पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी तथा स्वामी व्रतानन्द जी महाराज है। आज उन्होंने मेरा भी सम्मान किया है यह मेरा सौभाग्य है। विदित हो कि श्री जीववर्द्धन शास्त्री गत दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के एक पक्ष के चुनाव में मंत्री पद पर चुने गये हैं। यह भी एक उनके जीवन की विशेष उपलब्धि है।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने भी तीनों विद्वानों को अपनी शुभकामना एवं बधाई दी और अभिनन्दन को कार्यकर्ताओं के उत्साह को बढ़ाने का एक प्रभावशाली माध्यम बताया।

मुख्य रूप से समारोह में प्रधारे कालाहांडी के सांसद श्री बसन्त कुमार पांडा ने संक्षिप्त में अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि मेरे लिए गुरुकुल आमसेना प्रारम्भ से ही प्रेरणा का केन्द्र रहा है। पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी महाराज का आशीर्वाद मुझे सदैव प्राप्त होता रहा है और मैं यह मानता हूँ कि उड़ीसा के इस आदिवासी एवं गरीब क्षेत्र में गुरुकुल आमसेना की अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यहाँ से हजारों छात्र–छात्राओं को शिक्षित एवं संस्कारित करके उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होने योग्य बनाया गया है। अतः मैं पूज्य स्वामी जी महाराज के उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्य की कामना करता हूँ और गुरुकुल के लिए सदैव समर्पित भाव से सहयोग करने का संकल्प लेता हूँ।

सायं 3 से 6 बजे तक गुरुकुल के छात्र–छात्राओं द्वारा भव्य व्यायाम प्रदर्शन किया गया जिसे देखकर उपस्थित जनसमूह आश्चर्य चकित था। सभी छात्र–छात्राओं ने अपनी विशेष गणवेश में सम्मिलित रूप से परेड की तो ऐसा लग रहा था कि जैसे हम किसी सैनिक छावनी में कार्यक्रम देख रहे हैं और बाद में उनके द्वारा दिखाये गये सभी कार्यक्रम अत्यन्त दर्शनीय थे। रात्रि को गुरुकुल सम्मेलन में फिर छात्र–छात्राओं ने अपनी प्रतिभाओं का परिचय दिया।

इसी प्रकार 7 फरवरी, 2022 को प्रातः यज्ञ एवं मध्यान्ह में कार्यक्रम का समापन हुआ। स्वामी धर्मानन्द जी ने सभी को अपना आशीर्वाद प्रदान किया और स्वामी व्रतानन्द जी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इन तीनों दिनों में आयोजित विभिन्न सम्मेलनों का मंच संचालन आचार्य मनुदेव, आचार्य कुंजदेव मनीषी, आचार्य पुष्पा वेदश्री, आचार्य कोमल जी आदि ने बड़ी कुशलता के साथ किया। गुरुकुल के छात्र–छात्राओं द्वारा प्रदर्शित विविध कार्यक्रमों से प्रभावित होकर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उन्हें पारितोषिक देकर उत्साहित किया। तीनों दिन के कार्यक्रम में दूर–दूर से आर्यजनों ने पधारकर अपनी भागीदारी की। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

आर्य भजनोपदेशक श्री आनन्द स्वरूप आर्य जी का देहावसान

आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री आन्नद स्वरूप आर्य जी, गाँव न्यामतपुर, वहेड़ी, बरेली (उ. प्र.) का दिनांक 8 फरवरी, 2022 को प्रातःकाल अधिक कोहरे के कारण मोटरसाइकिल वस की चपेट में आने से सड़क दुर्घटना में मौके पर ही देहावसान हो गया। श्री आनन्द स्वरूप आर्य जी याज्ञिक, दान प्रवृत्ति एवं मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने अपने गाँव में एक यज्ञशाला का निर्माण करवाने का भी सराहनीय कार्य किया तथा वह गाँव में हर वर्ष आर्य समाज का उत्सव भी कराते रहते थे। श्री आनन्द स्वरूप आर्य जी आर्य समाज के सुयोग्य भजनोपदेशकों में से एक थे। उनके व्यक्तित्व को देखकर सभी आर्यजन प्रभावित होते थे। ऐसे कर्मठ भजनोपदेशक का हम सबके बीच से अचानक चले जाना उनके परिवार तथा आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता आदरणीय श्री आनन्द स्वरूप आर्य जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें एवं शोक संतप्त पारिवारिकजनों तथा इष्ट मित्रों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

पं. रामस्वरूप जी (ताऊ जी) का आकस्मिक निधन

आर्य समाज के प्रसिद्ध व यशस्वी भजनोपदेशक पण्डित रामस्वरूप जी (ताऊ जी) का दिनांक 9 फरवरी, 2022 को 95 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में आर्य समाज का अपने भजनों के माध्यम से काफी प्रचार-प्रसार किया तथा ग्रामीण क्षेत्रों में कई आर्य समाजों की भी स्थापना की। वह आर्य समाज काकड़वाड़ी, मुम्बई के अन्तर्गत भी काफी समय तक आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करते रहे। वर्तमान में उनका गुरुकुल एटा से गहरा सम्बन्ध था और उनका अन्तिम संस्कार भी उनकी इच्छा के अनुरूप गुरुकुल एटा के प्रांगण में ही किया गया। वे पिछले कई दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका इलाज घर पर ही चल रहा था। पंडित जी का सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में ही व्यतीत हुआ था, वह बहुत ही मृदुभाषी, व्यवहार कुशल, प्रतिभा सम्पन्न बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी थे। ऐसे यशस्वी भजनोपदेशक का हम सबके बीच से अचानक चले जाना उनके परिवार तथा आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता आदरणीय पं. रामस्वरूप जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें एवं शोक संतप्त पारिवारिकजनों तथा इष्ट मित्रों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

कर्मठ कार्यकर्ता श्री रणसिंह आर्य जी अब नहीं रहे

आर्य समाज के कर्मठ एवं सेवाभावी कार्यकर्ता आदरणीय श्री रणसिंह आर्य (जूनागढ़) का दिनांक 6 फरवरी, 2022 को सायंकाल 5.00 बजे अचानक देहावसान हो गया है। श्री रणसिंह आर्य जी सपत्नीक वर्षो से वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड में निवास कर रहे थे। वे साधक, यज्ञप्रेमी, अनुशासन प्रिय तथा अथक परिश्रमी थे। उन्होंने क्रियात्मक योग शिविर का सार बड़े परिश्रम से लिखकर, संकलित करके 'ब्रह्म विज्ञान' नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित कराया तथा एक ट्रस्ट बनाकर कई अन्य वैदिक पुस्तकें भी प्रकाशित कराई थी। वृद्धावस्था के कारण वह कुछ मास से अस्वस्थ थे और अहमदाबाद में अपनी सुपुत्री के निवास पर चिकित्सा प्राप्त कर रहे थे। ऐसे कर्मठ कार्यकर्ता का हम सबके बीच से अचानक चले जाना उनके परिवार तथा आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता आदरणीय रणसिंह आर्य जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें एवं शोक संतप्त पारिवारिकजनों तथा इष्ट मित्रों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

श्री चन्द्रदेव त्यागी जी का देहावसान

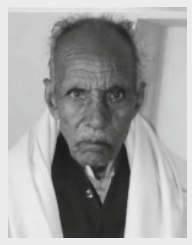

श्री चन्द्रदेव त्यागी जी, ग्राम-खजूरी, किला-परीक्षितगढ़, जिला-मेरठ (उत्तर प्रदेश) का विगत दिनों अस्वस्थता के कारण देहावसान हो गया है। श्री चन्द्रदेव जी अपने प्रारम्भिक जीवन से ही आर्य समाज के विचारों से ओत-प्रोत रहे। उन्होंने अपने परिवार को भी आर्य संस्कार दिये जिसके अनुरूप उनके सुपुत्र स्वामी देवेश्वरानन्द जी ने युवावस्था में ही संन्यास ग्रहण करके आजीवन आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अपना जीवन समर्पित करने का संकल्प लिया है। यह उनके जीवन पर उनके पूज्य पिता जी के संस्कारों का ही प्रभाव है। मैं एक माह पूर्व श्री चन्द्रदेव जी से उनके आवास पर मिलने गया था, उस समय वह अस्वस्थ चल रहे थे। परन्तु मुझे ऐसा आभास नहीं हो रहा था कि उनका निधन इतनी जल्दी हो जायेगा। श्री चन्द्रदेव जी के निधन के समाचार से व्यक्तिगत रूप से भी मुझे गहरा आघात एवं दुःख पहुंचा है। ऐसे पुरानी पीढ़ी के कर्मठ, आर्य कार्यकर्ता का निधन आर्य समाज एवं उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति हुई है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता आदरणीय श्री रणसिंह आर्य जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें एवं शोक संतप्त पारिवारिकजनों तथा इष्ट मित्रों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

पुरानी पीढ़ी के आर्य भजनोपदेशक पं. अभयराम शर्मा जी नहीं रहे

पुरानी पीढ़ी के आर्य भजनोपदेशक पं. अभयराम शर्मा जी का विगत दिनों लगभग 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया है। पं. अभयराम जी बहुत ही योग्य भजनोपदेशक थे, उन्होंने अनेक भजनों की प्रस्तुति आकाशवाणी (रेडियो) के माध्यम से भी की थी तथा भजनों की कई पुस्तकें लिखकर प्रकाशित कराई जिनमें 'दयानन्द गाथा' नामक पुस्तिका अत्यधिक प्रसिद्ध है। उन्होंने अपने जीवन में कई नवयुवकों को भजन गायन की शिक्षा देकर उन्हें भजनोपदेशक के रूप में तैयार किया। ऐसे कर्मठ भजनोपदेशक एवं आर्य समाज के प्रचार-प्रसार करने वाले पं. अभयराम शर्मा जी का निधन आर्य समाज एवं उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता आदरणीय पं. अभयराम शर्मा जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें एवं शोक संतप्त पारिवारिकजनों तथा इष्ट मित्रों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज के महाधन, निष्पृह योगी, सत्य साधक स्वामी सत्यपति जी महाराज की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर उनके पैतृक गांव–फरमाणा, जिला–रोहतक, हरियाणा में स्थानीय आर्य समाज के तत्वावधान में स्मृति सभा का आयोजन सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ के प्रधान मुनि सत्यजित जी, स्वामी आदित्यवेश जी, दर्शन योग महाविद्यालय सुन्दरपुर के स्वामी शान्तानन्द जी, करनाल से स्वामी सोमानन्द जी, स्वामी नित्यानन्द जी, बहन प्रवेश व बहन पूनम आर्या आदि अनेक संन्यासी एवं विद्वानों ने दी श्रद्धांजलि

आर्य समाज के लब्धप्रतिष्ठ संन्यासी, निष्पृह योगी, सत्य साधक, ब्रह्मनिष्ठ स्वामी सत्यपति जी महाराज की प्रथम पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में 9 फरवरी, 2022 को उनके पैतृक गांव–फरमाणा, जिला–रोहतक, हरियाणा की आर्य समाज के तत्वावधान में स्मृति सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रातः 9 से 10 बजे तक विदुषी बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या के पौरोहित्य में यज्ञ हुआ और उसके पश्चात् सभा का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सभा में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त स्वामी सत्यपति जी द्वारा स्थापित वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़, गुजरात के अध्यक्ष एवं संचालक मुनि सत्यजित जी, स्वामी जी के शिष्य स्वामी शान्तानन्द जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी सोमानन्द जी, स्वामी नित्यानन्द जी, बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या जी, श्रीमती दयावती आर्या जी, हरियाणा सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता डॉ. यशवीर शास्त्री जी, जिला वेद प्रचार मण्डल के अध्यक्ष श्री सुभाष सांगवान जी आदि के अतिरिक्त मालवीय, पूठी, जुलाना, बहुअकबरपुर, मोखरा, बलम्भा, टिटौली व रोहतक की विभिन्न आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

परोपकारिणी सभा के महामंत्री एवं वानप्रस्थ साधक आश्रम के प्रधान आचार्य सत्यजित मुनि जी ने स्वामी जी को श्रद्धांजलि देते हुए बताया कि वे कितने निष्पृह व्यक्तित्व के धनी थे। वे सदैव अपनी बात हंसते हुए कहा करते थे। उनके व्यवहार में सत्य पूर्णतः चरितार्थ होता था। उन्होंने हमारे जैसे बहुत नवयुवकों को योग एवं दर्शनों का प्रशिक्षण देकर तैयार किया। निःसंदेह वे आर्य समाज के महाधन थे। आज उनकी जन्मस्थली पर आकर मैं अभिभूत हूँ और उन्हें अपने श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी सत्यपति जी को योग के क्षेत्र में सर्वोच्च पद प्राप्त व्यक्तित्व की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि स्वामी जी सत्य के साधक थे। उन्होंने अपना नाम सत्यपति भी इसी भावना से रखवाया था। बचपन से ही स्वामी सत्यपति जी महाराज के स्वभाव एवं कार्यों से यह आभास होता था कि वे विशेष आत्मा हैं और बाद में उन्होंने इस भविष्यवाणी को सिद्ध करके दिखाया। गांव में रहते हुए 19 वर्ष की आयु तक उन्होंने एक अक्षर नहीं पढ़ा। वे अधिकतर समय मौन रहते थे। इधर–उधर खेत में या गलियों में घूमते रहते थे और लोग उन्हें पागल समझते थे। किन्तु वे पागल थे नहीं, बल्कि उनके वे लक्षण किसी विशेष साधक का परिचय दे रहे थे। स्वामी सत्यपति जी ने अनेक विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुए अपना मार्ग प्रशस्त किया और योग के क्षेत्र में पूरे आर्य जगत में उन्होंने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। फरमाणा गांव को यह गौरव प्राप्त है कि यहां से एक साधारण परिवार में जन्में एक नवयुवक ने इस गांव का नाम पूरे विश्व में प्रसिद्ध कर दिया। एक मुस्लिम परिवार में जन्म लेने के बावजूद स्वामी जी के संस्कार उन्हें एक संन्यासी और योगी बनने की ओर प्रारम्भ से ही प्रेरित कर रहे थे। ऐसे महान संन्यासी को अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए हम अपना सौभाग्य समझता हूँ। स्वामी सत्यपति जी महाराज से जुड़े हुए अपने–अपने संस्मरण विभिन्न वक्ताओं ने इस अवसर पर प्रस्तुत किये और उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

बहन पूनम आर्या ने बताया कि सर्वप्रथम मुझे व प्रवेश आर्या को स्वामी सत्यपति जी के सत्संग से ही यह प्रेरणा मिली कि हमें अपना जीवन अध्यात्म की ओर लगाना चाहिए और बाद में उनके शिविर के समापन पर हमने यह संकल्प विधिवत रूप से लिया।

स्वामी शान्तानन्द जी ने कहा कि ग्राम फरमाणा हमारे लिए विशेषकर रोजड़ से जुड़े सभी स्नातकों के लिए एक तीर्थ स्थल के रूप में है। इस प्रकार अन्य वक्ताओं ने भी अपने–अपने तरीके से स्वामी जी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की। आर्य समाज फरमाणा की ओर से प्रधान श्री नफे सिंह आर्य, मंत्री डॉ. राजेश आर्य व कोषाध्यक्ष श्री जयपाल आर्य, कर्मठ कार्यकर्ता श्री सत्यवीर आर्य

आदि ने सभी संन्यासियों एवं विद्वानों को सम्मानित किया।

विदित हो कि स्वामी सत्यपति जी महाराज के परिवार में यद्यपि सभी स्त्री–पुरुष कहने के लिए मुसलमान अवश्य हैं किन्तु उन सभी ने बड़ी श्रद्धा के साथ यज्ञ में सम्मिलित होकर और यजमान बनकर पूज्य स्वामी जी महाराज को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सभी परिवारजनों को आर्य समाज में आने और सदस्य बनने के लिए निमंत्रित किया गया। इस पूरे कार्यक्रम में मुख्य रूप से आर्य समाज के प्रधान श्री नफे सिंह आर्य, मंत्री डॉ. राजेश आर्य, कोषाध्यक्ष श्री जयपाल आर्य, कार्यकर्ता श्री सत्यवीर आर्य, श्री मनोज पहलवान, समाजसेवी श्री महावीर सिंह सारण, पूर्व सरपंच कर्मवीर, वर्तमान सरपंच श्री आशीष आदि के अतिरिक्त आर्य समाज मालवी के प्रधान श्री रामनिवास, आर्य पवन पूठी आदि का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम के उपरान्त सभी के लिए प्रीति भोज की भी व्यवस्था की गई थी। सभी आगन्तुक आर्यजनों को स्वामी सत्यपति जी की स्मृति में प्रकाशित स्मारिका एवं स्वामी जी की आत्मकथा निःशुल्क वितरित की गई। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।